ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-6* July - 2017
Innovation The Research Concept

हिन्द महासागर में भारत–चीन प्रतिस्पर्धा

सारांश

इस लेख को मुख्यतः तीन भागों में विभक्त कर विश्लेषित किया गया है। प्रथम भाग में हिन्द महासागर का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसके अर्न्तगत हिन्द महासागर का नामकरण अवस्थिति तथा उसके व्यापारिक, आर्थिक एवं सामरिक महत्व का विश्लेषण किया गया है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इस क्षेत्र में महाशक्तियों का हस्तक्षेप हुआ, जिसके कारण यह क्षेत्र अशान्त हो गया। महाशक्तियों के हस्तक्षेप से हिन्दमहासागर के तटवर्ती राष्ट्रों पर जो प्रभाव पड़ा, उसका विश्लेषण किया गया। दूसरे भाग में इस बात का विश्लेषण है कि चीन कैसे निरन्तर हिन्दमहासागर में भारत को घेरने का प्रयास कर रहा है। उसकी इस कार्यवाही से भारत की सुरक्षा चिन्तायें बढ़ी है। भारत भी चीन से इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा करने की कोशिश कर रहा है, जिससे वह अपने दीर्घकालिक हितों की सुरक्षा कर सकें। तीसरे भाग में हिन्दमहासागर का भारत की सुरक्षा के लिए क्या महत्व है, का विश्लेषण किया गया है। भारत तीन तरफ से जल से घिरा है। इसके तीन महत्वपूर्ण महानगर तथा रक्षा प्रतिष्ठान तटों पर स्थित हैं। भारत की आर्थिक एवं व्यापारिक गतिविधियाँ हिन्द महासागर से होती है। ऐसे में हिन्द महासागर की सुरक्षा भारत के लिए अति महत्वपूर्ण है।

राम कृष्ण सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर,
रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग,
श्री गणेश राय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, डोभी,
जौनपुर

मुख्य शब्द : भू–राजनीति, प्रतिस्पर्धा, श्वेत–पत्र, भू–सामरिक, आर्थिक कोरिडोर, गुटनिरपेक्षता, वैश्वीकरण, उदारीकरण।

प्रस्तावना

संयुक्त राज्य अमेरिका के महान नौसैनिक विचारक अल्फेड थेपर महान ने हिन्द महासागर के सम्बन्ध में एकदम सही भविष्यवाणी करते हुए लिखा है कि हिन्द महासागर पाँचों महासागरों की कुंजी है, 21वीं शताब्दी में युद्ध का फैसला स्थल पर न होकर समुद्र पर होगा। '' राष्ट्र हिन्दमहासागर पर नियन्त्रण स्थापित करेगा वही एशिया पर नियन्त्रण स्थापित करेगा।'' आज के परिपेक्ष्य में यह कथन सही प्रतीत होता है क्योंकि हिन्दमहासागर अन्तर्राष्ट्रीय भू–राजनीति के केन्द्र में है। इसलिए हिन्दमहासागर में अमेरिका रूस, चीन आदि देश अपनी उपस्थिति बनाये रखने का प्रयास कर रहे हैं। महाशक्तियाँ हिन्द महासागर के सामरिक, व्यापारिक, आर्थिक एवं राजनीतिक महत्व को ध्यान में रखकर यहाँ अपने वर्चस्व की लड़ाई लड़ रही हैं, जिसके कारण हिन्दमहासागर का वातावरण तनाव पूर्ण हो गया है। भारत की सुरक्षा हिन्द महासागर से सीधे तौर पर प्रभावित होती है, इसलिए भारत के लिए यह चिन्ता का विषय है कि कैसे वह अपने दीर्घ कालिक हितों की सुरक्षा करें।

अध्ययन का उद्देश्य

इसके अध्ययन का मुख्य उद्देश्य हिन्दमहासागर में चीन की उपस्थिति के कारण भारत तथा उसके पड़ोसी राष्ट्रों पर पड़ने वाले प्रभाव का विश्लेषण करना है। चीन की हिन्दमहासागर में उपस्थिति से भारत के सुरक्षा हित सीधे तौर पर प्रभावित होते हैं। चीन भारत को घेरेने का निरन्तर प्रयास कर रहा है। जिससे भारत का व्यापारिक, आर्थिक एवं सामरिक हित प्रभावित होते हैं। भारत की सुरक्षा हिन्दमहासागर की सुरक्षा पर निर्भर है। ऐसी स्थिति में भारत के लिए यह जरूरी है, कि वह महाशक्तियों विशेष कर चीन की उपस्थिति को इस क्षेत्र में कम करें। इसके लिए उसे अन्य राष्ट्रों के साथ मिलकर ब्लूवाटर नेवी का निर्माण करना चाहिए, तभी वह चीन के विस्तारवादी नीति का मुकाबला कर सकते है। इस क्षेत्र में उत्पन्न होने वाले खतरों को ध्यान में रखकर भारत को एक दीर्घकालिक प्रयास करना होगा, तभी भारत की सुरक्षा को सुनिश्चिता प्रदान की जा सकती है।

हिन्दमहासागर : एक परिचय

हिन्दमहासागर विश्व में एक मात्र ऐसा महासागर है, जिसका नामकरण किसी देश विशेष के नाम पर पड़ा है। हिन्दमहासागर प्रशान्त महासागर व

एटलांटिक महासागर के बाद विश्व का तीसरा बड़ा महासागर है। हिन्दमहासागर का कुल क्षेत्रफल 28,356,500 वर्ग मील है, इसका क्षेत्रफल एशिया, अफ्रीका महाद्वीपों के बराबर है। इसके उत्तर में एशिया महाद्वीप पश्चिम में अफ्रीका महाद्वीप, पूरब में आस्ट्रेलिया महाद्वीप अव्यवस्थित है।

इसका जल एशिया, अफ्रीका एवं आस्ट्रेलिया महाद्वीप को स्पर्श करता है। हिन्दमहासागर के तटवर्ती राष्ट्रों की संख्या 47 है। विश्व की लगभग एक तिहाई जनसंख्या हिन्दमहासागर के तटवर्ती क्षेत्रों में निवास करती है। हिन्दमहासागर चार महत्वपूर्ण सामुद्रिक मार्गों स्वेजनहर, बाव–अल–सन्देह जल सन्धि, हॉर्मुज जन सन्धि व मलक्का की खाड़ी इसके प्रमुख परिवहन एवं व्यापारिक मार्ग है। ये मार्ग विश्व के अन्य भागों से जोड़ते है। एशिया, अफ्रीका, आस्ट्रेलिया को जोड़ने वाले प्रमुख वायु मार्ग हिन्दमहासागर के ऊपर से गुजरते है। एक रिकार्ड के अनुसार प्रत्येक 12 मिनट में एक वायुमान इसके ऊपर से गुजरता है। विश्व के एक तिहाई हवाई अड्डे हिन्दमहासागर के तटवर्ती देशों अवस्थित है। इस लिए हिन्दमहासागर का महत्व और बढ़ जाता है। विश्व की लगभग 80% से अधिक का व्यापार हिन्दमहासागर के क्षेत्र से होता है। विश्व का लगभग 90 प्रतिशत रबड़, 90 प्रतिशत टिन, 76 प्रतिशत सोना, 16 प्रतिशत लोहा, 28 प्रतिशत मैगनीज, 98 प्रतिशत हीरा, 60 प्रतिशत यूरेनियन, 99 थोमियम, तथा विश्व का लगभग 1/3 भाग तेल खाड़ी क्षेत्र से निकाला जाता है।

हिन्दमहासागर विश्व के केन्द्रीय मानचित्र पर अव्यवस्थित है, इसलिए इसका सामरिक महत्व है। हिन्दमहासागर विश्व मानचित्र पर ऐसी जगह अवस्थित है जहाँ दक्षिणी गोलाई के सभी राष्ट्रों की सैनिक गतिविधियों पर नजर एवं नियन्त्रण रखा जा सकता है। हिन्दमहासागर के तटीय देशों तथा विश्व के व्यापारिक एवं सामरिक गतिविधियों को नियन्त्रित किया जा सकता है। इन्हीं कारणों से विश्व की महाशक्तियाँ हिन्दमहासागर पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का निरन्तर प्रयास कर रही है। इन क्षेत्र में अमेरिका, रूस, चीन निरन्तर अपनी नौसैनिक गतिविधियों को बढ़ा रहे है। भारत का पड़ोसी राष्ट्र चीन भारत को हिन्दमहासागर में घेरने का प्रयास कर रहा है। इसलिए भारत के सुरक्षा हित प्रभावित हो रहे है। यह भारत के लिए चिंता की बात है।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व मानचित्र पर अमेरिका एवं पूर्व सोवियत संघ जैसी दी महाशक्तियों का उदय हुआ। युद्ध के बाद फ्रान्स एवं ब्रिटेन ने एशिया एवं हिन्द महासागर से हटने का निर्णय लिया। अमेरिका ने इस क्षेत्र में अपने सामरिक एवं व्यापारिक हितों को ध्यान में रखकर डियागोगार्सिया में महत्वपूर्ण सुरक्षा निगरानी तन्त्र स्थापित किया है। 1980 में अमेरिका ने यहाँ पर R.D.F का गठन किया तथा 1982 में इसे अति आधुनिक बनाने का प्रयास किया। युद्ध के बाद फ्रान्स एवं ब्रिटेन ने एशिया एवं हिन्दमहासागर से हटने का निर्णय लिया वर्तमान समय में हिन्दमहासागर में अमेरिका का प्रभुत्व इतना अधिक हो गया है कि हिन्दमहासागर अमेरिका झील के रूप में परिवर्तित हो गया है।

वर्तमान समय में हिन्दमहासागर धीरे–धीरे भारत चीन जैसी उभरती हुई महाशक्तियों की प्रतिस्पर्द्धा का आखाड़ा बनता जा रहा है, जहाँ चीन अपनी 'मेरीटाइम सिल्क रोड' पहल के आधार पर इस क्षेत्र में अपनी उपस्थित बढ़ा रहा है, ऐसी स्थिति में भारत की चिंता और भी बढ़ गयी है। भारत अपने सामरिक व्यापरिक एवं आर्थिक हितों की सुरक्षा के लिये निरन्तर चीन के सापेक्ष अपनी गति विधि बढ़ा रहा है। इस कारण हिन्द महासागर चीन भारत की प्रतिस्पर्द्धा का केन्द्र बन गया है।

हिन्द महासागर में चीन भारत की प्रतिस्पर्द्धा

चीन की शुरू से यह नीति रही है कि वह हिन्दमहासागर में अमेरिकी वर्चस्व को कम करें एवं भारत को प्राप्त स्वभाविक भू–सामरिक लाभों से वंचित करने की रही है। हिन्दमहासागर में चीन की पनडुब्वियों की आवाज ही भारत की चिंता को निरन्तर बढ़ा रही है। भारत को चुनौती देने के लिए चीन हिन्दमहासागर को दक्षिण चीन सागर की तरह ही देखता है। हाल ही में चीनी सेना में यह घोषणा की है कि ''भारत को हिन्दमहासागर को अपना बैकयार्ड नहीं समझना चाहिये, ऐसी सोच भारत के लिये किसी भी तरह से उचित नहीं है। 26 मई 2015 को चीन का सबसे ताजा सैन्य राजनीतिक श्वेत पत्र जारी हुआ जिसको स्पष्ट किया गया कि चीन हिन्दमहासागर में ज्यादा से ज्यादा नौ सैनिक उपस्थित दर्ज करायेगा चीन अपनी 'मोतियों की माला' (Strimg of pearls) नीति के तहत पी.एल.ए.नेवी. (चीनी सेना की नौ सैनिक इकाई) हिन्दमहासागर के देशों में नेबल बेस या पोर्ट विकसित कर भारत को लगातार घेर रही है। चीनी कम्पनियों ने ग्वादर पोर्ट (पाकिस्तान), हम्बनटोटा (श्रीलंका), क्याक्यू (म्यांमार) आदि में अपना नौसैनिक वेस विकसित कर रहा है।

प्रसिद्ध रक्षा विश्लेषक टीसीए रंगाचारी ने चीन की इस नीति की आलोचना करते हुए कहा कि इन बन्दरगाह के आस–पास कोई व्यवसायिक गतिविधियाँ नहीं होती, चाहे ग्वादर हो या कोई और फिर क्यों चीन यहाँ पर अपनी उपस्थित को बढ़ा रहा है। चीन की राजनीतिक 'दोहरी सिल्क रोड पहल' या 'वनवेल्ट रोड' की रणनीति से चीन एक पूर्वी एशियाई ताकत से ऊपर उठकर एक वैश्विक शक्ति बनना चाहता है।

चीन अपनी घुसपैठ से पाकिस्तान को अपने समुद्री व स्थलीय रेशम मार्ग का केन्द्रिय लिंक बना दिया है। ऐसे में पाक अधिकृत कश्मीर से गुजरने वाले चीन के आर्थिक कोरिडोर से भारत को चितिंत होना स्वाभाविक है। भारतीय रक्षा विश्लेषक बह्म चेलानी ने बताया है कि एक तरफ चीन दक्षिण चीन सागर में भारत वियतनाम के गठबन्धन का विरोध करता है तो वही दूसरी ओर हिन्दमहासागर में भारत को घेरना चाहता है। इस सन्दर्भ में चीन का मत है कि ''तुम्हारा सागर हम सभी का सागर है और मेरा सागर सिर्फ मेरा सागर है।'' जो नीति चीन हिन्दमहासागर में लागू करना चाहता है। वही नीति दक्षिणी चीन सागर में मानने से इन्कार करता है।

भारत अपने दूसरे पड़ोसी देश म्यांमार और श्रीलंका में चीन की बढ़ती सक्रियता पर भी पर्याप्त ध्यान नहीं दे रहा है। चीन इस समय नेपाल बंग्लादेश, मालद्वीप हिन्दमहासागर में सेशल्स द्वीप समूहों पर अपना पैर जमा रहा है ऐसी स्थिति में महासागर के इन क्षेत्रों में दीर्घकालीन हितों को ध्यान में रखते हुए सही नीति बनाने की आवश्यकता है। चीन दक्षिणी म्यांमर के हगाई द्वीप पर एक बन्दरगाह बनाने का प्रस्ताव रखा है। माना यह जा रहा है कि यह बन्दरगाह चीन की नौ सेना के इस्तेमाल के लिये होगा। लेकिन यह बन्दरगाह इतना बढ़ा नहीं होगा जहाँ से चीन अपने बड़े नौ सैनिक जहाज का यहाँ से इस्तेमाल कर सकता है। भारतीय सूत्रों की कहना है कि चीन कोको द्वीप पर एक सिग्नल इंटेलिजेस स्टेशन का निर्माण कर रहा है, जिसकी सहायता से चीन समुद्र में भारतीय नौ सैनिक संचार पर नजर रख सकता है और भारत के उड़ीसा में स्थित भारतीय मिसाइलों के अड्डों की जानकारी प्राप्त कर सकता है। यह कार्य ही भारत के लिये चिन्ता का विषय है।

चीन हमारे पड़ोसी देश श्रीलंका में अपनी पैठ बना चुका है। चीन श्रीलंका के साथ एवं सहयोग बढ़ाने में लगा है। हमबनटोटा बन्दरगाह बनाने के लिये चीनी कम्पनियों से अनुबंध किया जा रहा है। दक्षिणी श्रीलंका के हमबनटोटा में चीन की मदद से आधुनिक बन्दरगाह का निर्माण किया जा रहा है। यहाँ पर 1000 मीटर लम्बे घाट का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ पर जहाज को खड़ा किया जा सकता है। इसके अलावा हमबनटोटा में एक प्राकृतिक गैस रिफाइनरी विमान ईंधन का गोदाम जहाजों की मरम्मत के लिये गोदी का निर्माण किया जा रहा है। एक रिपोर्ट के मुताबिक श्रीलंका सरकार हमबनटोटा बन्दगाह को आधुनिक बनाना चाहती है। कोलम्बों पोर्ट जो इस समय दक्षिण एशिया का सबसे आधुनिक एवं सुविधाओं से युक्त बन्दरगाह माना जाता है श्रीलंका इसके महत्व को कम नहीं करना चाहता है। चीन की इस कार्यप्रणाली से भारत की सुरक्षा समस्याएँ निरन्तर बढ़ती जा रही है।

इसी तरह मालद्वीप में चीन पहले से पर्यटन उद्योग में निवेश कर रहा है यद्यति मालद्वीप के साथ भारत के सम्बन्ध मधुर है। लेकिन दिल्ली को मालद्वीप को ओर और अधिक ध्यान देने की जरूरत है। मालद्वीप के छात्रों को चीन के विश्वविद्यालयों में पढ़ने के लिये प्रोत्साहित किया जा रहा है। यद्यपि भारत हिन्दमहासागर में चीन की तुलना में कहीं अच्छी स्थिति में है। चीन को हिन्दमहासागर का नाम भारत के नाम पर रखने पर भी आपत्ति है इस तरह की आपत्ति कभी आस्ट्रेलिया और इण्डोनेशिया को भी हो चुकी है। हालाकि कि इस नामकरण के पीछे भौगोलिक एवं परम्परागत कारक रहे है।

इस प्रकार एक लम्बे समय से चले आ रहे अमेरिकी वर्चस्व कम होने के साथ–साथ उभरती महाशक्तियों भारत एवं चीन की उपस्थिति ने हिन्दमहासागर में एक नया शक्ति समीकरण पैदा कर दिया है।

हिन्दमहासागर का भारत की सुरक्षा के लिये महत्व

राजनैतिक रूप से देखे तो अमेरिका का हिन्दमहासागर में उपस्थिति का भारत हमेशा से विरोध करता रहा है। गुटनिरपेक्षता के माध्यम से भारत हमेशा हिन्दमहासागर को शान्ति क्षेत्र बनाना चाहता है। स्वतन्त्रता के बाद भारत ने स्थल सेना के विकास पर ज्यादा बल दिया लेकिन नौसेना के विकास पर उतना ध्यान नहीं दिया। साथ ही हमारे नेताओं द्वारा हिन्दमहासागर में अमेरिका के जहाजी बेड़े के प्रवेश को भी नजर अन्दाज किया गया। इस सम्बन्ध में हमारे पूर्व प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहर लाल नेहरू का कथन था कि ''वे हमारे भू–भागीय समुद्र से दूर है और स्वाभाविक रूप से खुले समुद्र पर सबका अधिकार है।'' 1970 के दशक से भारत ने हिन्दमहासागर में यथार्थ नीति को अपनाना शुरू किया और गुट निरपेक्ष देशो के माध्यम से शान्ति क्षेत्र घोषित कराने का प्रयास किया। 1964 में गुटनिरपेक्ष देशों द्वारा काहिरा सम्मेलन में शान्ति क्षेत्र घोषित करने पर बल दिया गया। अन्ततः 16 दिसम्बर 1971 में संयुक्त राष्ट्र संघ ने अपने 26वें अधिवेशन में इसे शान्ति क्षेत्र घोषित कर दिया। 1968 में ब्रिटेन द्वारा स्वेज के पूर्व से सेना हटाने के बाद अमेरिका द्वारा 'शक्ति शून्यता के सिद्धान्त' के आधार पर सैन्यीकरण की घोषणा का भारत ने स्पष्ट विरोध किया।

शीत युद्ध के दौरान यह क्षेत्र अमेरिका और सोवियत संघ के बीच शक्ति प्रतिस्पर्धा का केन्द्र बन गया। भारत ने इसका निरन्तर विरोध किया। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद के दशक में वैश्वीकरण एवं उदारीकरण के दौर में राजनीतिक संघर्ष का स्थान आर्थिक सहयोग ने ले लिया जिसके परिणाम स्वरूप इसक्षेत्र के 14 देशों ने 6 मार्च 1997 को इण्डियन औसत रिम एशोसिएसन की स्थापना की भारत शुरू से इस संगठन में अहम स्थान रखता है। इस संगठन में उसके अधीन चार प्रमुख कार्य क्षेत्र है–

1. हिन्द महासागर व्यापार केन्द्र व नेटवर्क
2. पूँजी निवेश एवं सुविधाओं का विकास
3. व्यापार विकास कार्यक्रम
4. हिन्दमहासागर अध्ययन पीठ एवं एशोसिएट फैलो कार्यक्रम

भारत के लिये हिन्दमहासागर एवं तटवर्ती देशों का विशेष व्यापारिक आर्थिक एवं सामरिक महत्व है। सामरिक रूप से भारत की भौगोलिक स्थिति में भी स्वाभाविक रूप से हिन्दमहासागर क्षेत्र में कोई गड़बड़ी होती है तो भारत को त्वरित खतरा पहुँच सकता है। 26/11 की घटना के बाद हिन्दमहासागर क्षेत्र पर भारत की राजनीतिक नजर और पैनी हो गई है। पाइरेसी की समस्या हो या आंतकवाद इस क्षेत्र में भारत की सामरिक स्थिति उसे अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है। प्राकृतिक आपदा से उत्पन्न खतरों के सन्दर्भ में भी भारत को महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है। सामरिक स्थिति उसे और महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करती है। प्राकृतिक आपदा से उत्पन्न खतरों के सन्दर्भ में भी भारत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है जैसे कि सुनामी 2004 की घटना के समय भारत ने किया। भारत के महत्वपूर्ण बन्दरगाह

अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी में स्थित है, ये दोनों हिन्द महासागर के ही भाग है। भारत के पास लगभग 247 द्वीप हैं जिसमें 204 द्वीप बंगाल की खाड़ी में तथा 36 द्वीप अरब सागर में स्थित है। भारत की स्थानीय सीमा की लम्बाई 15 किमी0 है जबकि जलीय सीमा की लम्बाई अण्डमान निकोबार को लेकर 7516.5 किमी0 है। भारत का 200 समुद्री मील अन्नय आर्थिक क्षेत्र है जिसका उपयोग वैज्ञानिक शोध एवं प्राकृतिक साधनों के विद्धोहन के लिए किया जा सकता है। सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से भी हिन्दमहासागर के देशों के साथ हमारे सम्बन्ध पुरातन काल से है। ऐसी स्थिति में भारतीय सुरक्षा चिन्ता बढ़ जाती है। हिन्दमहासागर में चीन की बढ़ती हुई गतिविधि को देखते हुए इस क्षेत्र में भारत के लिये शक्ति सन्तुलन अपने पक्ष में करना आवश्यक है।

निष्कर्ष

उपयुक्त विश्लेषण के उपरान्त निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नई सरकार के गठन के बाद भारत हिन्दमहासागर में और अधिक व्यवहारिक नीति अपना रहा है। भारत हिन्दमहासागर के तटवर्ती राष्ट्रों से अपने सम्बन्ध प्रगाढ़ करने का प्रयास कर रहा है। भारत हिन्दमहासागर प्रबंधन को लेकर गम्भीर होता जा रहा है। भारत हिन्द महासागरीय चुनौतियों को दूर करने का प्रयास गम्भीरता के कर रहा है। भारत अपने बन्दरगाह को आधुनिक स्वरूप प्रदान करने का प्रयास कर रहा है। जिससे समुद्री जहाजों के आवागमन में सुविधा हो सके। इसके लिये भारत वाटर नेवी को मजबूत आधार प्रदान कर रहा है। भारत को एशिया एवं अफ्रीका के देशों के साथ मिलकर हिन्दमहासागर की सुरक्षा के लिये एक सुदृढ़ ढ़ाचा बनाना होगा। तभी जाकर हिन्दमहासागर में चीन की बढ़ती नौसैनिक गतिविधियों पर नियन्त्रण लगाया जा सकता है। इसके लिये भारत को हिन्दमहासागर देशों के साथ मिलकर एक सामरिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास के उद्देश्य को लेकर पहल करनी होगी। चीन निरन्तर हिन्दमहासागर में अपनी गतिविधियाँ बढ़ाने का प्रयास कर रहा है। चीन की हिन्दमहासागर में उपस्थिति को देखते है। भारत, अमेरिका और जापान ने जुलाई 17 में मालावार 'तट पर' विश्व का सबसे बड़ा नौसैनिक अभ्यास करने का निर्णय लिया है। चीन को रोकने के लिए भारत को ऐसा करना जरूरी था। इस नौसैनिक अभ्यास से चीन बौखला गया है। इस प्रकार देखा जाय तो कहा जा सकता है कि 21वीं शताब्दी में एशिया में भारत की स्त्रातेजिक भूमिका एवं प्रभाव का तेजी से विस्तार हो रहा है। चीन की हिन्द महासागर में बढ़ती सक्रियता को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि भारत के पास सशक्त नौसैनिक का होना आवश्यक है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की अमेरिका इजराइल एवं जापान की मात्रा का मन्तत्वय यही है कि भारत एशिया में चीन के सापेक्ष एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में खड़ा हो सकें, जिससे भारत अपने हितों की सुरक्षा कर सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *China to explore indian ocean seabed : Report : The china Post August 2, 2011, Available.*
2. *Garver, John W (2001), Protroacted conterst Sino-Indian rivaly in the Twenteenth century. New Delhi oxford University Press. P 292-93*
3. *स्ट्रैटिजिक एनालिसिस अप्रैल–जून फरवरी 17, 2011*
4. *इण्डिया स्ट्रैटिजिक, वाल्यूम–2010–9, सितम्बर 2007, पृष्ठ–30*
5. *स्ट्रैटिजिक डाइजेस्ट, अक्टूबर 04 पृष्ठ, 1433*